Demonetization: Impact on Indian Economy

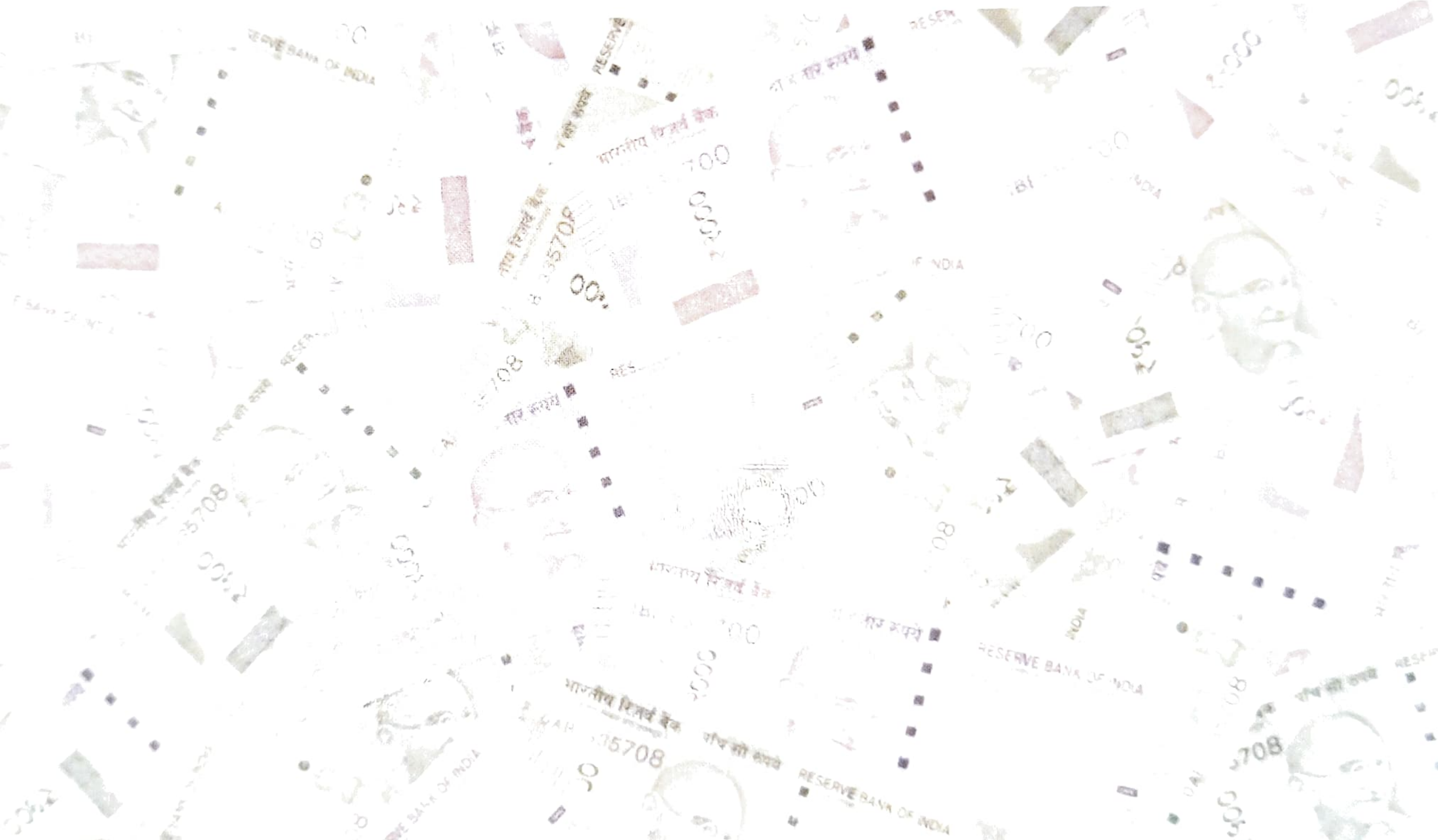

Prof. Sunita Jain

Demonetization: Impact on Indian Economy

विमुद्रीकरण: भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

Editor : Prof. Sunita Jain

Co-Editor : Prof. Neeraj Topkhane

Editorial Board:

Prof. Girish Mohan Dubey
Dr. Shakti Jain
Dr. Utsav Aanand
Dr. Rupali Saini
Dr. Keshav Tekam

SVN Publishing House

Book Version – 978-81-929700-0-5

Published by:
Swami Vivekanan University , Sagar

Demonetization: Impact on Indian Economy
-Prof. Sunita Jain

SECOND EDITION 2017

ISBN- 978-81-929700-0-5

Published By
Swatantra Computer & Printers
Itwari Ward, Sagar (M.P.)
Ph. 07582-243728 Mob. 9981466528

Laser Composing
Swatantra Computer & Printers
Itwari Ward, Sagar (M.P.)
Ph. 07582-243728 Mob. 9981466528

13. Impact Of Demonetization On The GST 104
- Ms. Preeti Kashyap
14. Impact Of Demonetization On Information Technology 110
- Ms. Lata Soni
15. Demonetization: A Long lasting And Optimistic Decision 116
- Mr. Chaitanya kaushakiya
- Ms. Neha Dubey Kaushakiya.
16. Demonetization And It's Impact Of Indian Economy 122
- Mr. Bikas Deb
17. विमुद्रीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था 130
– डॉ.उत्सव आनन्द एवं शोधार्थी – श्री मधुकर इटेवार
18. विमुद्रीकरण का (नोटबन्दी) सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव एक समीक्षात्मक विश्लेषण 136
– डॉ. बिन्दु श्रीवास्तव
19. भारत में विमुद्रीकरण का प्रभाव 141
– डॉ. गजेन्द्र कुमार रावत
20. विमुद्रीकरण – कालाधन रोकने का प्रयास 150
– डॉ. शक्ति जैन
21. अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण एक लोकतंत्रात्मक आर्थिक सुधार (भारतीय अर्थव्यवस्था के परिपेक्ष्य में) 156
– डॉ. केशव टेकाम
– श्री नीलेश कुमार भास्कर
22. विमुद्रीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था 166
– डॉ. विशाल मिश्रा
23. विकास के लिए जरूरी – पत्र मुद्रा से दूरी 171
– डॉ. अंजना चतुर्वेदी
24. भारतीय अर्थव्यवस्था : कमनगदी की ओर बढ़ता एक कदम 176
– डॉ. वीरेन्द्र सिंह मटसेनिया
25. विमुद्रीकरण : डिजीटल अर्थव्यवस्था हेतु एक अभिनव पहल 190
– डॉ. एम. एल. सोनी
26. कैशलेस ट्रांजेक्शन, डिजिटल बैकिंग आवश्यकता और माध्यम / उपकरण 193
– डॉ. भावना यादव
27. प्राचीन काल में मुद्रा का उद्भव एवं विकास: एक विश्लेषण 200
– डॉ. माधव सिंह रायकवार
– श्री जितेन्द्र कुमार खोब्रागड़े
28. विमुद्रीकरण के वह फायदे जो भारत को बनाएँगे सुपरपावर 207
– श्रीमती राजकुमारी लोधी

अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण एक लोकतंत्रतात्मक आर्थिक सुधार (भारतीय अर्थव्यवस्था के परिपेक्ष्य में)

'श्री नीलेश कुमार भास्कर

''डॉ0 केशव टेकाम

सारांश – भारत की अर्थव्यवस्था में स्वतंत्रता के उपरांत विमुद्रीकरण 08 नवम्बर 2016 को दूसरी बार भाजपा सरकार के नेतृत्व में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किया गया जिसके बाद अर्थ जगत में भारतीय अर्थव्यवस्था में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिले। अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण लोकतंत्र का एक अच्छा आर्थिक सुधार माना जाता है विमुद्रीकरण से देश में व्याप्त अनेक आर्थिक बुराईयों को दूर किया जाता है देश की जनता को विमुद्रीकरण के दौरान अनेक समस्याओं का सामना भी करना होता है अर्थव्यवस्था में प्रचलित जाली मुद्रा टेक्स चौरी, कालाधन, आतंकवाद, नक्सलवाद आदि समस्याओं में कमी आती है। विमुद्रीकरण से अनेक लाभ व नुकसान देश की जनता को सहन करने होते है फिर भी विमुद्रीकरण लोकतंत्र का एक अच्छा आर्थिक सुधार माना जाता है क्योंकि यह कदम सरकार का जनहितकारी कदम होता है जिससे समस्त वर्गो को समान अवसर प्राप्त होते है एवं लोकतंत्रात्मक व्यवस्था को मजबूती मिलती है। सरकार जनता के धन से ही जनता का विकास करती है तो यह आवश्यक है कि लोकतंत्र में पारदर्शिता हो तभी सरकार द्वारा लोकतंत्र का विकास संभव है। जिसका उल्लेख इस शोधपत्र के माध्यम से बताया जा रहा है। यह शोध पत्र द्वितीयक समंको पर आधारित है।

ISBN- 978-81-929700-0-5

आधार वाक्य – विमुद्रीकरण, अर्थव्यवस्था, आर्थिक सुधार।

प्रस्तावना – भारत लोकतंत्रात्मक राष्ट्र है यहां पर जनता पर जनता के द्वारा शासन किया जाता है लोकतंत्र में जनहित के लिये अत्यधिक प्रोत्साहित किया जाता है एवं समानतावादी विचारधारा को अपनाया जाता है। लोकतंत्र में जनता के अधिकारों की विशेष तौर पर सुरक्षा की जाती है एवं राष्ट्र में सभी वर्गो के लिये समान अवसर प्रदान किये जाते है। लोकतंत्र में राजनैतिक सुधार के साथ–साथ सामाजिक सुधार व आर्थिक सुधार भी मुख्य है, राष्ट्र में अच्छे राजनैतिक सुधार करके अच्छे सामाजिक सुधार व अच्छे आर्थिक सुधार किये जा सकते है। लोकतंत्रात्मक राष्ट्र की अच्छी राजनैतिक व्यवस्था ही लोकतंत्र का उचित निर्वाह कर सकती है। लोकतंत्रात्मक राष्ट्र में राजनीति एवं समाज एक दूसरे के पूरक हैं एवं राजनीति पर ही सामाजिक सुधार व आर्थिक सुधार निर्भर करते है। यदि राष्ट्र में शोषण मुक्त व्यवस्था मजबूत रखनी है तो इन सुधारों को आवश्यक रूप से अपनाना चाहिये। सामाजिक सुधार में आर्थिक सुधारों का अत्यन्त महत्व होता है। जब राष्ट्र में आर्थिक विसंगतियां समाज पर या देश की व्यवस्था पर हावी होने लगती है तब सरकार को इन विसंगतियों को दूर करने हेतु मुद्रा विमुद्रीकरण जैसे आवश्यक उपाय अपनाने होते है ताकि राष्ट्र में आर्थिक रूप से स्वच्छ माहौल उत्पन्न किया जा सकें। प्राचीन काल से आचार्य चाणक्य से लेकर आधुनिक काल के डॉ0 भीमराव अम्बेडकर तक ने विमुद्रीकरण को अर्थव्यवस्था का एक मुख्य चरण बताया जिससे किसी भी अर्थव्यवस्था में नवजीवन की उत्पत्ति होती है।

विमुद्रीकरण– जब किसी देश की सरकार चलित मुद्रा को कानूनी तौर पर बंद कर देती है तो इसे विमुद्रीकरण कहते है। "जब किसी देश में काले धन की एक समानान्तर अर्थव्यवस्था खड़ी हो जाती है और अर्थव्यवस्था में जाली मुद्रा अधिक बढ़ जाती है तब नोटबंदी या विमुद्रीकरण किया जाता है। जिसके अंतर्गत मुद्रा को तुरन्त प्रभाव से बंद कर नई मुद्रा जारी कर दी जाती है। विमुद्रीकरण के बाद उस मुद्रा की कीमत कुछ नहीं रह जाती है उससे किसी भी तरह की खरीद–फरोख्त नहीं की जा सकती। सरकार बंद किये गये नोटों को बैंकों में बदल कर उनकी जगह नये नोट लेने के लिये समय सीमा तय कर देती है, उस दौरान जिसने अपने नोट बैंकों में जाकर नहीं बदले या जमा नहीं किये उनके नोट कागज का टुकड़ा बन कर रह जाते हैं।

ISBN- 978-81-929700-0-5

भारत में विमुद्रीकरण का इतिहास – भारत मे पहली बार 1976 में विमुद्रीकरण किया गया था जिसके तहत 500, 1000, 10000 रूपये के नोटों को कानूनी तौर पर बंद कर दिया गया था। 1970 के दशक में प्रत्यक्ष कर की जांच में जुड़ी वानचू कमेटी ने काला धन बाहर लाने और उसे खत्म करने के लिये विमुद्रीकरण का सुझाव दिया था। लेकिन इस सुझाव के सार्वजनिक हो जाने की बजह से विमुद्रीकरण नहीं किया जा सका था। 1977 में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार में एक कानून बनाकर 500, 1000, 10000 रूपये के नोटों को बंद कर दिया था। आर.बी. आई. के तत्कालीन गवर्नर आर.जी पटेल सरकार के इस कदम से सहमत नहीं थे पटेल के अनुसार यह फैसला कालाधन खत्म करने के बजह पिछली भ्रष्ट सरकारों को कमजोर बनाना था।

भारतीय अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण की आवश्यकता – भारत में 1978 के विमुद्रीकरण के उपरांत 08 नवम्बर 2016 को लगभग 38 वर्ष के अंतराल के बाद आवश्यकता प्रतीत हुई। देश में कालेधन की मात्रा व जाली मुद्रा की मात्रा अत्याधिक बढ़ जाने के कारण व राजनैतिक वर्ग काले धंधों की आड़ में समाज का शोषण कर रहे थे ये लोग देश में व विदेश में अपना काला धन जमा करके भारतीय अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रहे थे, जिसको ध्यान में रखकर विमुद्रीकरण जैसी प्रक्रिया को अपनाने का भारी कदम उठाने की आवश्यकता महसूस की गई।

भारतीय अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण की आवश्यकता के प्रमुख उद्देश्य–

- विमुद्रीकरण का मुख्य कारण लोकतंत्र में आपराधिक क्षेत्र पर नियंत्रक करना है।
- विमुद्रीकरण मुद्रा की जमाखोरी (कालाधन) को खत्म करने के लिये आवश्यक रूप से किया जाता है।
- आतंकवाद, अपराध, और तस्करी जैसे आपराधिक कामों में बड़े पैमाने पर नगद लेन–देन होता है इस पर अंकुश लगाने के लिये ही विमुद्रीकरण किया जाता है।
- नकली व जाली मुद्रा जब अर्थव्यवस्था में आ जाती है तो उसे समाप्त करने के लिये विमुद्रीकरण किया जाता है।

- टैक्स चोरी को नियंत्रित करने के लिये विमुद्रीकरण किया जाता है। अर्थात अर्थव्यवस्था में जब काले धन व जाली मुद्रा प्रचलन के कारण लोग आयकर से बचते है तब सरकार को विमुद्रीकरण का रास्ता अपनाना होता है।
- चुनाव कार्यो में वोट खरीद की प्रथा पर नियंत्रण करने के लिये भी विमुद्रीकरण का सहारा लिया जाता है।

विमुद्रीकरण के साकारात्मक पहलू– साकारात्मक प्रभावों में देश में व्याप्त कालाधन अधिकाधिक समाप्त हो जाता है अर्थात जो लोग जमाखोरी करते है उनके लिये सबक लग जाता है। जैसा कि पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी ने अपने लेख ''विमुद्रीकरण की जरूरत और इससे अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव'' के माध्यम से स्पष्ट किया कि 460 विलियन डालर यानी 30 लाख करोड़ रू. अर्थव्यवस्था में व्याप्त है जिसे विमुद्रीकरण के द्वारा समाप्त कर दिया जायेगा। वर्ल्ड बैंक के चेयरमेन ''जिम योंग किम'' ने भारत में 2016 की नोटबंदी के उपरांत यह बयान दिया कि ''मै मोदी सरकार से बेहद प्रभावित हूँ'' भारत में आगे बढ़ने की क्षमता अब और प्रबल हो गई है।

14 फरवरी 2017 में डॉ0 भगवती प्रकाश शर्मा अपने लेख के माध्यम से लिखा है, कि विमद्रीकरण के अनेक प्रत्यक्ष लाभ दिखाई दे रहे है इस नोटबंदी का सबसे बड़ा असर जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद को खत्म करने में एवं बिहार, झारखण्ड व पूर्वोत्तर में माओवादी नक्स्ली व अन्य प्रकार की हिंसा व आतंकवाद को खत्म करने में बड़ी सफलता मिली है।

विमुद्रीकरण के नाकारात्मक पहलू – विमुद्रीकरण के नाकारात्मक प्रभावों में यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि विमुद्रीरकण से अर्थव्यवस्था में कालेधन व अन्य अराजकताओं पर नियंत्रण की वजह और वृद्धि होने की संभावना बढ़ जाए, जिसे निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है– www.B.B.C.Com. के माध्यम से 15 नवम्बर 2016 को संवाददाता सौतिक विश्वास ने विमुद्रीकरण पर अपने लेख के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये –

- विश्व बैंक के पूर्व अर्थशास्त्री कौशिक बासु के अनुसार भारत में

ISBN 978-81-929700-0-5

वस्तु एवं सेवाकर ठीक था परन्तु विमुद्रीकरण ठीक नहीं है, भारत की अर्थव्यवस्था काफी जटिल है और इससे फायदे के मुकाबले व्यापक नुकसान उठाना पड़ेगा।

- अर्थशास्त्री प्रभात पटनायक का कहना है कि सरकार के इस कदम से साफ है कि उन्हें पूंजीवाद की समझ नहीं है। उनका कहना है कि आमतौर पर इस स्थिति में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में नये बिजनेस की ओपनिंग होती है ताकि पुरानी मुद्रा को नई मुद्रा में तब्दील किया जा सके। इस हालत में लोग सामने आकर प्रस्ताव देगें की आप मुझे 1000 का नोट दीजिए और इसके बदले 800 या 700 रूपये लीजिये। इसके परिणामस्वरूप काले धन पर काबू पाने की बजह काले धंधों का प्रसार बढ़ता है। प्रभात ने यह बात "द वायर" न्यूज बेवसाइड पर एक लेख के माध्यम से कहीं।

- अर्थशास्त्री विवेक दहेजिया इससे असहमत है कि नोटों को रद्द किये जाने का कदम जोखिभ भरा है इसके अनुसार "भारतीय अर्थव्यवस्था का संचालन मॉनेटरी पॉलिसी के तहत हो रहा है। इसे हम इन्फ्लेशन लक्षित संचालन के रूप में जानते है यदि प्रचलन की करेंसी का एक हिस्सा और डिमांड डिपाजित नष्ट हो जाते है तो रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया इसकी पूर्ति कर सकता है। इसे अर्थशास्त्र की भाषा में ओपन मार्केट ऑपरेशन कहा जाता है।

अर्थव्यवस्था पर विमुद्रीकरण के प्रभाव

राजनैतिक प्रभाव | सामाजिक प्रभाव | आर्थिक प्रभाव

(1) राजनैतिक प्रभाव– विमुद्रीकरण का राजनैतिक क्षेत्र पर अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ा चूंकि राजनैतिक पार्टियां काला धन इकट्ठा करके चुनाव कार्यो में इस्तेमाल करते है तथा जनता के मतों को रूपयों में खरीदकर लोकतंत्र का अपमान करते है। भारत में राजनैतिक वर्ग आर्थिक रूप से अत्याधिक मजबूत है जो अपने काले कार्यो के कारण कालेधन का सृजन करते है एवं समाज के समस्त वर्गो का अपाहिज बनाते चले जाते है अशिक्षित व गरीब वर्ग तो आज भी राजनैतिक दास्ता में संलिप्त है अतः ये वर्ग थोड़े से लालच में ही अपने वोट को बेच देते है। राजनीति के क्षेत्र में विमुद्रीकरण का प्रभाव लोकतंत्र को क्षति न पहुंचाने का कार्य करता है।

अर्थात विमुद्रीकरण के कारण राजनैतिक दल आर्थिक रूप से कमजोर हो जाते है एवं वोट को खरीदने में असमर्थ हो जाते है एवं निष्पक्ष चुनाव को दिशा मिलती है।

(2) सामाजिक प्रभाव– विमुद्रीकरण के सामाजिक प्रभाव भी देखने को मिलते है जिनमें मुख्य रूप से अमीर वर्ग को आर्थिक क्षति हासिल होती है क्योंकि ये वर्ग कालेधन का उपयोग करने में असमर्थ हो जाते है। परन्तु मध्यम व गरीब वर्ग मुद्रा की पर्याप्तता की कमी के कुछ दिन तक परेशान होता है पर आर्थिक क्षति से बच जाता है, अर्थात अमीर वर्ग ही विमुद्रीकरण का शिकार होता है।

(3) आर्थिक प्रभाव– विमुद्रीकरण की प्रक्रिया का आर्थिक क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं पर पडने वाले प्रभाव को निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट किया जा सकता है–

1 **कृषि क्षेत्र पर प्रभाव**– सरकार द्वारा समय का सही निर्धारण न करके विमुद्रीकरण करने के कारण कृषि क्षेत्र प्रभावित होता है जिस तरह 08 नवम्बर 2016 को विमुद्रीकरण किया गया उस समय कृषि क्षेत्र में रवि की फसल की बुआई का समय होता है अतः धन के अभाव में कृषक समय से कृषि करने में असमर्थ हो गये है। एवं अनेक समस्याओं से गुजरते है। जैसे – समय पर बीज न मिल पाना, सही समय पर खाद्य का न मिल पाना, समय पर सिंचाई का न हो पाना आदि।

2 **औद्योगिक क्षेत्र पर प्रभाव**– औद्योगिक क्षेत्र पर भी कृषि क्षेत्र की भांति प्रभाव देखने को मिलता है अतः समय पर कच्चामाल न मिलने के कारण उद्योगों की गति में कमी आती है विमुद्रीकरण के कारण कुटीर उद्योग की अपेक्षा लघु उद्योग अधिक प्रभावित होते है। 10 नवम्बर (नई दिल्ली) ूण्डण्क्पसलीनदजण्पद के माध्यम से भारतीय उद्योग परिसंघ सी. सी. आई के अनुसार विमुद्रीकरण का अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इससे कई दशकों से जड़ जमाये भ्रष्टाचार को खत्म करने में मदद मिलेगी।

3 **बाजार पर प्रभाव**– विमुद्रीकरण के कारण बाजार सर्वाधिक प्रभावित होता है बाजार में मांग पूर्ति दोनों ही प्रभावित होती है। दोनों मे कमी दिखाई पड़ती है। इस तरह मांग, पूर्ति व कीमत तीनों को विमुद्रीकरण

के कारण प्रभावित होना पड़ता है। कच्ची वस्तुओं के बाजार अधिक प्रभावित होते है। साथ ही लोगों को कुछ समय के लिये मुद्रा अभाव के कारण कामधंधे बंद करने पड़े जिससे दैनिक आवश्यकताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। जैसे – हरी सब्जियां, दूध, मछली, मांस, आदि के बाजार में तो आर्थिक क्षति भी दिखाई देती है।

4 **रोजगार पर प्रभाव**– विमुद्रीकरण के कारण सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में रोजगार के साधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अर्थात मुद्रा की कमी के कारण कुछ समय के लिये रोजगार के साधनों को स्थिर कर दिया जाता है। जैसी हाल ही में रिलायंस जियो ने 25 अरब डालर का निवेश किया परन्तु रोजगार में वृद्धि नहीं की इसके परिणाम स्वरूप प्रतिर्स्पधा के कारण कई लोगों को रोजगार से वंचित कर दिया गया। परन्तु अनुमान लगाया जा रहा है कि आगे रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी।

5 विमुद्रीकरण का आर्थिक जगत पर एक और प्रभाव यह होगा कि ब्याज दरें कम होगीं, रियल स्टेट सेक्टर में जमीन, मकानों की कीमतें कम होगीं।

भारत में 08 नवम्बर 2016 का विमुद्रीकरण– भारत में 08 नवम्बर 2016 को तत्कालीन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्र को सम्बोधित करते हुये 500 व 1000 के नोटो को कानूनी तौर पर बंद करने का ऐलान किया था और आर.बी.आई. के अनुसार 31 मार्च 2016 तक भारत में 16.42 लाख करोड़ रूपये मूल्य के बाजार में थे जिसमें करीब 14.18 लाख करोड़ रूपये 500 एवं 1000 के नोटों के रूप में थे जो विमुद्रीकरण के द्वारा चलन से बाहर कर दिये गये। जिसके उपरांत देश में पूर्व उल्लेखित प्रभाव दिखाई पड़े। 08 नवम्बर का विमुद्रीकरण भारत में कालेधन व पांच राज्यों के चुनाव को ध्यान में रख कर किया गया था। यह पूर्व नियोजन कार्य सरकार ने आर्थिक व राजनैतिक हितों को ध्यान में रखकर किया था जिसका प्रभाव चुनाव प्रक्रिया में दिखाई पड़ा अतः राजनैतिक दल आर्थिक रूप से कमजोर होकर वोट को खरीदने में असमर्थ रहे।

भारतीय अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण के दौरान निम्न आंकड़े सार्वजनिक किये गये–

- जी.डी.पी. में 7 फीसदी विकास दर का अनुमान है।

- पूरे वित्त वर्ष 2016–17 के दौरान जी.डी.पी. की बढ़ोत्तरी दर 7.1 फीसदी आंकी गयी है। जो बीते वर्ष 2015–16 के दौरान 7.9 फीसदी थी।
- मैन्यू फैक्चरिंग के क्षेत्र में भी 10.6 से घटकर 7.7 फीसदी की दर दर्ज बतायी जा रही है।
- विमुद्रीकरण के कारण इस तरह की बाते आती रही है कि लगभग 2–3 करोड़ लोग बेरोजगार हुये है।
- उ.प्र. में व्यापारियों की शिकायतें रही है कि धंधा लगभग 40–70 फीसदी कम हुआ है।
- केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन के अनुसार चालू वित्त वर्ष में जी.डी.पी. 7.1 फीसदी रहेगी।
- विमुद्रीकरण से राजकोषीय घाटा 3.9 फीसदी रहने का अनुमान जताया जा रहा है।
- आठ बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर 2016 में 5.7 फीसदी थी जो जनवरी 2017 3.7 फीसदी रही है।
- ऐसोचेम ने माना है कि उद्योग जगत पर विमुद्रीकरण का नाकारात्मक प्रभाव होगा।
- विजकॉन सर्वे के अनुसार विमुद्रीकरण का मुद्रा स्फीति पर साकारात्मक प्रभाव होगा। यह समस्त समंक ूण्डण्कंपसलीनदजण्पद के माध्यम से लिये गये है।

भारत में विमुद्रीकरण की प्रक्रिया के दौरान सामने आयी कुछ कठिनाईयां–

- विमुद्रीकरण की प्रक्रिया के दौरान यह देखने में आया कि अर्थव्यवस्था में मुद्रा की आपूर्ति कम हो गयी।
- नोट बदलने के लिये बैंकों में भारी मारा–मारी शुरू हो गयी।
- नोट बदलने के लिये व्यक्तियों को बहुत परेशानियों का सामना करना पडा, यहां तक कि लाइन में खड़े कुछ लोगों का दम घुटकर या दिल का दौरा पड़ने से अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।
- रूपयों के अभाव में दिहाडी मजदूरों को समय पर मजदूरी न मिलने से उन्हें काफी परेशानी का सामना करना पडा।

- अचानक आयी मुद्रा की कमी के कारण किसानों के कृषि से संबंधित कार्यों में बाधा उत्पन्न हुई।
- विभिन्न उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति में कमी का सामना करना पडा।
- बैंक कर्मचारियों को अतिरिक्त बोझ का सामना करना पडा।

विमुद्रीकरण पर अर्थशास्त्रियों के विचार– पूर्व प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने विमुद्रीकरण को तो 'संगठित लूट' तक करार दिया था। सिंह ने ब्रिटेन के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जॉन किन्स का हवाला देते हुये कहा अंततः हम सबको मरना ही है मै परिणाम को लेकर आश्वत नहीं हूँ लेकिन इतना जरूर है कि 90 प्रतिशत आम आदमी और असंगठित क्षेत्र के 55 फीसदी कामगार परेशानी में है। नोबेल पुरूस्कार विजेता प्रो. अमर्त्य सेन ने विमुद्रीकरण को घातक करार देते हुये भविष्यवाणी तक कर दी विमुद्रीकरण से अर्थव्यवस्था की विकासदर 2–3 फीसदी कम हो सकती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– उपरोक्त अध्ययन के उपरान्त शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि विमुद्रीकरण लोकतंत्र में आर्थिक सुधार हेतु सरकार का एक अच्छा कदम है जिससे अर्थव्यवस्था में व्याप्त अनेक विसंगतियाँ जैसे– कालाधन, कर चोरी, आतंकवाद, नकस्लीवाद आदि क्षेत्रों को दूर किया जा सकता है, अर्थात कम समय में ही इन अराजकताओं पर अंकुश लगाया जा सकता है, एवं लोकतंत्र को सुरक्षित किया जा सकता है। साथ ही देश में कीमत नियंत्रण, रोजगार वृद्धि, सरकार को अधिक आय की प्राप्ति, निवेश में वृद्धि, ब्याज दर में कटौती आदि परिवर्तन अर्थव्यवस्था में होगें एवं लोकतंत्र के भावी भविष्य के विकास की संभावनाऐं बढ़ेगी।

सुझाव –

- सरकार को विमुद्रीकरण जैसी प्रक्रिया समय समय पर या प्रत्येक दशक के उपरांत अपनानी चाहिये जिससे लोग कालाधन व जमाखोरी करने से डरें।
- सरकार को विमुद्रीकरण की प्रक्रिया अपनाते समय अर्थव्यवस्था के कृषि क्षेत्र को ध्यान में रखना चाहिए, अर्थात् कृषि क्षेत्र पर इसका नकारात्मक प्रभाव न पड पाये।
- विमुद्रीकरण जैसी प्रक्रिया को अपनाने के पूर्व सरकार को इससे

ISBN- 978-81-929700-0-5

आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखकर पूर्व तैयारी या रणनीति बनानी चाहिए।

- विमुद्रीकरण जैसे कदम का सबसे ज्यादा नकारात्मक प्रभाव दिहाडी मजदूर वर्ग पर देखा गया है, अतः सरकार को उनके लिए पहले से कुछ नीति बनानी चाहिए।

संदर्भ –

1 www.wikipedia.com

2 www.BBC.com

3 www.webduniya.com

4 www.patrika.com

5 www.jansatta.com

6 www.m.dailyhunt.in

7 www.business.khaskhabar.com

8 दैनिक भास्कर 15 नबम्वर 2016।

9 नवदुनिया, 20 नबम्वर 2016।

10 आर्थिक सर्वेक्षण 2016–17।

11 इंडियन एक्सप्रेस

12 अमर उजाला, 12 नबम्वर 2016।